ISSN 2454 - 5163
प्रकाशन तिथि : 26 अक्टूबर 2015, मूल्य 2 रुपये, वर्ष 34, अंक 4, कुल पृष्ठ 36

वीतराग-विज्ञान

(पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट का मुखपत्र)

सम्पादक : डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

आध्यात्मिक प्रवचनकार, साहित्य शिल्पी, दार्शनिक, गहन चिन्तक,

बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल'

वीतराग-विज्ञान (388)

हिन्दी, मराठी व कन्नड़ भाषा में प्रकाशित

जैनसमाज का सर्वाधिक बिक्रीवाला आध्यात्मिक मासिक

सम्पादक :

डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

सह-सम्पादक :

डॉ. संजीवकुमार गोधा

प्रकाशक एवं मुद्रक :

ब्र. यशपाल जैन द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि., जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशित।

सम्पर्क-सूत्र :

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015

फोन :(0141)2705581, 2707458

E-mail : ptstjaipur@yahoo.com

ISSN 2454 - 5163

शुल्क :

आजीवन	:	251 रुपये
वार्षिक	:	25 रुपये
एक प्रति	:	2 रुपये

मुद्रण संख्या :

हिन्दी	:	7200
मराठी	:	2000
कन्नड़	:	1000
कुल	:	10200

आत्मकल्याण की शर्त

पहली शर्त यह है कि मुझे एक आत्मा के सिवाय कोई वस्तु नहीं चाहिये - ऐसा दृढ निश्चय होना चाहिये। दुनिया की कोई वस्तु, धनसम्पत्ति, प्रतिष्ठा आदि कुछ नहीं, एक आत्मा की ही आवश्यकता है, ऐसा दृढ निश्चय होना चाहिये। जिसे ऐसा दृढ निश्चय हो उसके चाहे जितने प्रतिकूल संयोगों में भी तीव्र और कठिन पुरुषार्थ करना ही पड़ेगा। पुरुषार्थ के बिना प्राप्ति नहीं है। क्रमबद्ध अनुसार ही आत्मा प्राप्त होगा। परन्तु क्रमबद्ध का निर्णय करने वाले की दृष्टि ज्ञायक की ओर ही जाती है और तब क्रमबद्ध की सच्ची श्रद्धा होती है। तथा दूसरी बात यह है कि एक द्रव्य की पर्याय का पर के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है, एक द्रव्य दूसरे द्रव्य का स्पर्श नहीं करता। कर्म आत्मा को स्पर्श नहीं करते, आत्मा शरीर का स्पर्श नहीं करता। अहाहा ! ऐसा निर्णय हो तभी उसकी दृष्टि सच्ची होती है।292

– द्रव्यदृष्टि जिनेश्वर, पृष्ठ 68

वीतराग-विज्ञान

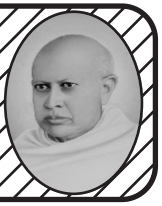

वीतराग-विज्ञान ही, तीन लोक में सार।
वीतराग-विज्ञान का , घर-घर होय प्रसार।।

वर्ष : 34 (वीर नि. संवत् - 2541) 388 अंक : 4

जिया तैं आतमहित नहिं...

जिया तैं आतमहित नहिं कीना।
रामा रामा धन धन कीना, नरभव फल नहिं लीना।।टेक।।
जप तप करकें लोक रिझाये, प्रभुता के रस भीना।
अन्तर्गत परनाम न सोधे, एकौ गरज सरी ना।।
जिया तैं आतमहित नहिं... ।।1।।
बैठि सभा में बहु उपदेशे, आप भये परवीना।
ममता डोरी तोरी नाहीं, उत्तम तैं भये हीना।।
जिया तैं आतमहित नहिं... ।।2।।
'द्यानत' मन वच काय लायके, निज अनुभव चित्त दीना।
अनुभव धारा ध्यान विचारा, मंदर कलश नवीना।।
जिया तैं आतमहित नहिं... ।।3।।

– कविवर पण्डित द्यानतरायजी

सम्पादकीय

बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' : एक असाधारण व्यक्तित्व

– डॉ. हुकमचंद भारिल्ल

आध्यात्मिकसत्पुरुष पूज्य गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी के भागीरथ प्रयासों से प्रवाहित आध्यात्मिक ज्ञान गंगा में आकण्ठ निमग्न पाँच लाख मुमुक्षु भाई-बहिनों एवं सहस्राधिक प्रवचनकार विद्वानों में आज ऐसा कौन है जो आदरणीय विद्वद्वर्य बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' से परिचित न हो, उनकी देव-शास्त्र-गुरु एवं सिद्ध पूजन से परिचित न हो, उनके प्रवचन सुनकर प्रभावित न हुआ हो, गद्‌गद् न हुआ हो।

उनके असामयिक महाप्रयाण से समस्त मुमुक्षु समाज के साथ-साथ हिन्दी जगत की अपूरणीय क्षति हुई है।

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट और पण्डित टोडरमल दिगम्बर जैन महाविद्यालय के विद्वानों, कार्यकर्ताओं और छात्रों से उनका अगाध स्नेह रहा है। जब तक स्वस्थ रहे, तब तक समय-समय पर उनका मार्गदर्शन प्राप्त होता रहा है। प्रत्येक शिविर में तो वे पधारते ही रहे, उनके प्रवचनों का लाभ मिलता ही रहा; प्रशिक्षण शिविरों में भी उनका भरपूर सहयोग निरन्तर मिलता ही रहता था।

महावीर निर्वाण वर्ष में एक अत्यंत सफल प्रशिक्षण शिविर उन्होंने कोटा में स्वयं लगाया था। परम सौभाग्य की बात है कि उनके प्रयासों से उनके प्रति अगाध स्नेह होने से पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी उस शिविर में स्वयं पधारे

थे और आठ दिन उसमें रहे थे।

पूज्य गुरुदेवश्री का जिन्हें अगाध वात्सल्य प्राप्त था, उन विद्वानों में एक महत्वपूर्ण नाम जुगलकिशोरजी 'युगल' का भी है।

पूज्य गुरुदेवश्री के प्रति समर्पित उनकी **'लो रोको तूफान चला रे'** शीर्षक की कविता ने एक समय सचमुच तूफान ला दिया था।

यद्यपि हड्डियों का ढांचा उनका शरीर उनका साथ नहीं देता था; तथापि उनकी वाणी का ओज देखने लायक था। यद्यपि वे एकदम दुबले-पतले थे; तथापि महाभाग्य से उन्हें गुरुदेवश्री के बराबर 91 वर्ष 4 माह की उम्र प्राप्त हुई।

एक तो जनसामान्य का इस आयु को स्पर्श कर पाना ही सहज संभव नहीं होता; यदि कोई भाग्यशाली इतनी उम्र पा भी ले तो भी इस उम्र में भी आत्मा के प्रति इतने सजग रहना महान भाग्य की सूचक है।

अन्त तक अत्यंत जागृत अवस्था में आत्मसाधनारत आपका जीवन तो अनुकरणीय था ही, आपने मरण भी समाधिमय प्राप्त किया।

सादा जीवन और उच्च विचार के वे मूर्तिमान रूप थे। उनके रहन-सहन की एक अलग पहिचान थी। एक सादा धोती और अलग टाइप की सादा कमीज मात्र उनकी यही ड्रेस थी, जो अपने आपमें अद्वितीय थी।

उनके वियोग में संतप्त परिवारजनों के प्रति हार्दिक संवेदना के साथ उनसे अनुरोध करता हूँ कि सभी के समान बाबूजी को भी एक दिन जाना ही था। प्रसन्नता की बात है कि वे पूरी सजग अवस्था में गये और सबने उनकी भरपूर सेवा की। मुझे पक्का विश्वास है कि उन्हें निश्चित रूप से सुगति की प्राप्ति हुई होगी। ॐ शान्ति !

तत्त्वार्थमणिप्रदीप

(आचार्य उमास्वामी कृत तत्त्वार्थसूत्र की टीका)

(गतांक से आगे....)

गोत्र और अन्तराय कर्म के प्रकार

नामकर्म के प्रकारों की चर्चा के उपरान्त अब गोत्र और अन्तराय कर्मों के भेदों की बात करते हैं –

उच्चैर्नीचैश्च ।।१२।।

दानलाभभोगोपभोगवीर्याणाम् ।।१३।।

उच्च गोत्र और नीच गोत्र के भेद से गोत्र कर्म दो प्रकार का है।

दानान्तराय, लाभान्तराय, भोगान्तराय, उपभोगान्तराय और वीर्यान्तराय के भेद से अन्तराय कर्म पाँच प्रकार का है।

१. जिस कर्म के उदय के निमित्त से, सदाचारी लोकपूज्य कुल में जन्म होता है; उस कर्म को **उच्चगोत्र** कर्म कहते हैं।

२. जिस कर्म के उदय के निमित्त से, निन्दनीय आचरणवाले कुल में जन्म होता है; उस कर्म को **नीचगोत्र** कर्म कहते हैं।

१. जिस कर्म के उदय के निमित्त से, देने के भाव होने पर भी देना संभव नहीं हो पाता; उस कर्म को **दानान्तराय** नामक कर्म कहते हैं।

२. जिस कर्म के उदय के निमित्त से, लाभ की इच्छा होते हुए भी, प्रयत्न करने पर भी लाभ नहीं हो पाता; उस कर्म को **लाभान्तराय** कर्म कहते हैं।

३. जिस कर्म के उदय के निमित्त से, भोग चाहते हुए भी, प्रयत्न करते हुए भी भोग की प्राप्ति नहीं हो पाती; उस कर्म को **भोगान्तराय** कर्म कहते हैं।

४. जिस कर्म के उदय के निमित्त से, उपभोग चाहते हुए भी, प्रयत्न करते हुए भी, उपभोग संभव नहीं हो पाता; उस कर्म को **उपभोगान्तराय** कर्म कहते हैं।

५. जिस कर्म के उदय के निमित्त से, प्रयत्न करने पर भी उत्साह नहीं होता; वह **वीर्यान्तराय** कर्म है।।१२-१३।।

स्थितिबंध की चर्चा

पहले और दूसरे सूत्र में बंध के हेतु और स्वरूप बताने के उपरान्त तीसरे सूत्र में बंध के प्रकारों की चर्चा आरंभ की थी।

वहाँ कहा था कि बंध चार प्रकार का होता है –

१. प्रकृति बंध, २. स्थिति बंध, ३. अनुभाग बंध और ४. प्रदेश बंध। उसमें से सर्वप्रथम प्रकृति बंध की चर्चा में अबतक कर्मों की आठ मूल प्रकृतियाँ और एक सौ अड़तालीस उत्तर प्रकृतियों की चर्चा विस्तार से की।

अब स्थिति बंध की चर्चा प्रसंग प्राप्त है।

आदितस्तिसृणामन्तरायस्य च त्रिंशत्सागरोपमकोटि कोट्यः परास्थितिः ।।१४।।

सप्ततिर्मोहनीयस्य ।।१५।।

विंशतिर्नामगोत्रयोः ।।१६।।

त्रयस्त्रिंशत्सागरोपमाण्यायुषः ।।१७।।

अपरा द्वादशमुहूर्ता वेदनीयस्य ।।१८।।

नामगोत्रयोरष्टौ ।।१९।।

शेषाणामन्तर्मुहूर्ता ।।२०।।

आदि के तीन अर्थात् ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय और अंतराय – इन चार कर्मों की उत्कृष्ट स्थिति तीस कोड़ाकोड़ी सागर की होती है।

मोहनीय कर्म की उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर है।

नामकर्म और गोत्रकर्म की उत्कृष्ट स्थिति बीस कोड़ाकोड़ी सागर है।

आयुकर्म की उत्कृष्ट स्थिति तैंतीस सागर है।

वेदनीय कर्म की जघन्य स्थिति बारह मुहूर्त है।

नामकर्म और गोत्रकर्म की जघन्य स्थिति आठ मुहूर्त है।

शेष कर्मों की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त ही है।

शेष कर्मों में ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय, आयु और अन्तराय कर्म आते हैं। इन सभी की जघन्य स्थिति अन्तर्मुहूर्त ही है।

इसमें दर्शनमोहनीय की उत्कृष्ट स्थिति सत्तर कोड़ाकोड़ी सागर और चारित्रमोहनीय की उत्कृष्ट स्थिति चालीस कोड़ाकोड़ी सागर होती है।

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, वेदनीय, मोहनीय, अंतराय, नाम और गोत्र कर्म का

उत्कृष्ट स्थिति का बंध, संज्ञी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक मिथ्यादृष्टि जीव के ही होता है।

आयुकर्म की उत्कृष्ट स्थिति का बंध सैनी पंचेन्द्रिय पर्याप्तक के ही होता है।

मोहनीय कर्म की जघन्य स्थिति नौंवे गुणस्थान में ही बंधती है।

आयुकर्म की जघन्य स्थिति संख्यात वर्ष की आयुवाले कर्मभूमियों मनुष्यों और तिर्यंचों के बंधती है।

ज्ञानावरण, दर्शनावरण, अन्तराय, वेदनीय, नाम और गोत्र कर्म की जघन्य स्थिति सूक्ष्मसांपराय नाम के दशवें गुणस्थान में बंधती है।

इसप्रकार यह स्थिति बंध का विवरण है।।१८-२०।।

अनुभाग बंध

प्रकृति बंध और स्थिति बंध की चर्चा के उपरान्त अब अनुभाग बंध की बात करते हैं –

विपाकोऽनुभवः ।।२१।।

स यथानाम ।।२२।।

ततश्च निर्जरा ।।२३।।

विपाक को अनुभव (अनुभाग) कहते हैं।

वह अनुभव कर्मों के नामानुसार ही होता है।

फल दे चुकने के बाद उस कर्म की निर्जरा हो जाती है।

विशेष प्रकार के पाक को विपाक कहते हैं अथवा द्रव्य, क्षेत्र, काल, भव और भाव के निमित्तों के भेद से अनेक प्रकार के होनेवाले पाक को विपाक कहते हैं। **यह विपाक ही अनुभव है, अनुभाग है।**

शुभ परिणामों की प्रकर्षता में शुभ प्रकृतियों का उत्कृष्ट और अशुभ प्रकृतियों का निष्कृष्ट अनुभाग बंध होता है तथा अशुभ परिणामों की प्रकर्षता में अशुभ प्रकृतियों का उत्कृष्ट और शुभ प्रकृतियों का निष्कृष्ट अनुभाग बंध होता है।

यह अनुभव या फल विपाक दो प्रकार का होता है – १. स्वमुख और २. परमुख से।

सभी मूल प्रकृतियों का स्वमुख से विपाक होता है। उत्तर प्रकृतियों में आयु, दर्शनमोहनीय और चारित्रमोहनीय को छोड़कर शेष **सजातीय प्रकृतियों का विपाक परमुख से भी होता है।**

नरकायु के मुख से मनुष्यायु या तिर्यंचायु का विपाक नहीं होगा। इसीप्रकार दर्शनमोह, चारित्रमोह के रूप में और चारित्रमोह, दर्शनमोह के रूप में नहीं फलेंगे।

कर्म का यह विपाक (अनुभव-अनुभाग-फल) अपने-अपने नामानुसार ही होता है। तात्पर्य यह है कि ज्ञानावरण का विपाक अर्थात् उदय ज्ञान को आवरित करने रूप ही फलेगा, अन्यरूप नहीं।

फल देने के बाद इन कर्मों की निर्जरा हो जाती है।

वह निर्जरा दो प्रकार की होती है –

१. सविपाक निर्जरा और २. अविपाक निर्जरा।

कर्मों का अपने समय पर उदय में आकर, फल देकर खिर जाना सविपाक निर्जरा है और तपश्चर्या आदि निमित्तों के मिलने पर कर्मों का समय के पहले खिर जाना अविपाक निर्जरा है।।२१-२३।।

प्रदेश बंध

प्रकृति, स्थिति और अनुभाग बंध की चर्चा होने के उपरान्त अब प्रदेश बंध की चर्चा करते हैं –

नामप्रत्ययाः सर्वतो योगविशेषात् सूक्ष्मैकक्षेत्रावगाहस्थिताः सर्वात्मप्रदेशेष्वनन्तानन्तप्रदेशाः ।।२४।।

अपने-अपने नामानुसार सभी भूत-भावी भवों में, योग विशेष के निमित्त से आनेवाले, आत्मा के सम्पूर्ण प्रदेशों में स्थित सूक्ष्म एकक्षेत्रावगाही अनन्तानन्त कर्म पुद्‌गल, प्रदेश बंध हैं।

तात्पर्य यह है कि ज्ञानावरणादि कर्म प्रकृतियों के कारण सभी ओर से सभी भवों में योगविशेष से सूक्ष्म एकक्षेत्रावगाहरूप से स्थित और सभी आत्मप्रदेशों में अनन्तानन्त कर्म पुद्‌गलों का बंधना, प्रदेश बंध है।

उक्त प्रदेश बंध की परिभाषा में निम्नांकित तथ्य समाहित हैं –

१. कार्मण वर्गणाओं के कर्माणुओं (कर्म प्रदेशों) में ज्ञानावरण आदि सभी कर्म प्रकृतियों के कर्माणु समाहित होते हैं।

२. जैसे वे कर्माणु आत्मप्रदेशों से एकक्षेत्रावगाहरूप बँधते हैं; उसी समय यदि आयु बंध नहीं हो रहा हो तो शेष सात कर्मों में या फिर आठों ही कर्मों में विभाजित हो जाते हैं।

३. सभी भवों में प्रत्येक समय यह प्रक्रिया चलती रहती है।

४. उनके बंधन में निमित्त मन-वचन-कायरूप योग होते हैं।

५. वे सभी परमाणु या प्रदेश अत्यन्त सूक्ष्म होते हैं।

६. आत्मा के असंख्यात प्रदेशों में अनन्तानन्त कर्म परमाणुओं के स्कंध बन्धरूप होते रहते हैं।

तात्पर्य यह है कि कार्मण वर्गणाओं के अनन्तानन्त कर्माणुओं का योग के निमित्त से निरन्तर बंधते रहना ही प्रदेशबंध है।।२४।।

पुण्य और पापरूप कर्म

चारों प्रकार के बंध की चर्चा होने के उपरान्त अब उन कर्मों को पुण्य और पाप के रूप में विभाजित करते हैं –

सद्वेद्यशुभायुर्नामगोत्राणि पुण्यम् ।।२५।।

अतोऽन्यत्पापम् ।।२६।।

साता वेदनीय, मनुष्य, तिर्यंच और देव आयु तथा उच्च गोत्र और नामकर्म की सैंतीस प्रकृतियाँ – कुल मिलाकर ब्यालीस प्रकृतियाँ पुण्य प्रकृतियाँ हैं।

इन पुण्य प्रकृतियों के अतिरिक्त शेष प्रकृतियाँ पाप प्रकृतियाँ हैं।

आस्रव और बंधतत्त्व का निरूपण करनेवाले छठवें, सातवें और आठवें अध्यायों के समाप्ति के अवसर पर कर्मों के आस्रव और बंध का विस्तार से निरूपण करने के उपरान्त अन्त में आचार्यदेव ने सोचा कि **पुण्य और पाप भी तो धर्म नहीं, कर्म ही हैं; उनका भी आस्रव-बंध होता है; अत: उनकी भी चर्चा यहीं कर लेना चाहिए; क्योंकि अगले अध्यायों में संवर, निर्जरा और मोक्षरूप धर्म की चर्चा चलेगी।**

कर्मों में चार घातिया कर्म तो पूर्णत: पापरूप ही हैं; अत: उनकी सभी प्रकृतियाँ पापरूप ही हैं। अघातिया कर्म आत्मगुणों को नहीं घातते और उनकी सत्ता अरहंत भगवान के भी पाई जाती है।

जो अरहंत भगवान अनन्त सुखी हैं, अनन्त सुखी हो गये हैं; उनके भी विद्यमान रहनेवाले अघातिया कर्मों में भी जो कर्म रागी-द्वेषी आत्मा को असाता के निमित्त हों, नीच कुल में पैदा करायें, नरकादि अशुभ गतियों में ले जायें और अशुभ शरीर के संयोगों के निमित्त हों; उन्हें पुण्य नहीं माना जा सकता; क्योंकि कभी-कभी पुण्य की व्युत्पत्ति भी इसप्रकार की जाती रही है कि **यो पुनाति आत्मानं स: पुण्यं –** जो आत्मा को पवित्र करे, वह पुण्य है।

यद्यपि तथ्य की बात तो यही है कि कर्म चाहे पुण्यरूप हो या पापरूप हो, जो आत्मा को बंधन में डाले, बंध का कारण हो; उसे पवित्र करनेवाला कैसे माना जा सकता है ? यही कारण है कि यहाँ आचार्यदेव ने पुण्य और पाप – दोनों ही कर्मों को बंध अधिकार में रखा है।

अघातिया कर्मों में असाता वेदनीय, अशुभ आयु, नीच गोत्र और नामकर्म की उन सभी प्रकृतियों को, जो आत्मा को प्रतिकूलता प्राप्त कराने में निमित्त हों, पाप माना गया है। पुण्य तो मात्र उन्हीं प्रकृतियों को माना है, जो लौकिक दृष्टि से आत्मा को अनुकूलता प्रदान कराने में निमित्त हों।

इसप्रकार घातिया कर्मों की ४७ प्रकृतियाँ हैं, ये सब पापरूप ही हैं। अघातिया कर्मों की १०१ प्रकृतियाँ हैं, उनमें पुण्य और पाप दोनों प्रकार की प्रकृतियाँ हैं। उनमें से निम्नोक्त ६८ प्रकृतियाँ पुण्यरूप हैं –

१. साता वेदनीय, २. तिर्यंचायु, ३. मनुष्यायु, ४. देवायु, ५. उच्च गोत्र, ६. मनुष्य गति, ७. मनुष्यगत्यानुपूर्वी, ८. देवगति, ९. देवगत्यानुपूर्वी, १०. पंचेन्द्रिय जाति, ११-१५. पाँच प्रकार का शरीर (औदारिक, आहारक, वैक्रियक, तैजस और कार्मण), १६-२०. शरीर के पाँच प्रकार के बन्धन (औदारिक बन्धन नामकर्म, वैक्रियिक बन्धन नामकर्म, आहारक बन्धन नामकर्म, तैजस बन्धन नामकर्म और कार्माण बन्धन नामकर्म), २१-२५. पाँच प्रकार का संघात (औदारिक संघात नामकर्म, वैक्रियिक संघात नामकर्म, आहारक संघात नामकर्म, तैजस संघात नामकर्म और कार्मण संघात नामकर्म), २६-२८. तीन प्रकार का अंगोपांग (औदारिक शरीर अंगोपांग नामकर्म, वैक्रियिक शरीर अंगोपांग नामकर्म और आहारक शरीर अंगोपांग नामकर्म)।

२९-४८. वर्णादिक की बीस प्रकृतियाँ (कोमल स्पर्श नामकर्म, कठोर स्पर्श नामकर्म, गुरु स्पर्श नामकर्म, लघु स्पर्श नामकर्म, शीत स्पर्श नामकर्म, उष्ण स्पर्श नामकर्म, स्निग्ध स्पर्श नामकर्म और रूक्ष स्पर्श नामकर्म, खट्टा रस नामकर्म, मीठा रस नामकर्म, कडुआ रस नामकर्म, कषायला रस नामकर्म, चरपरा रस नामकर्म, सुगंध नामकर्म, दुर्गंध नामकर्म, काला वर्ण नामकर्म, पीला वर्ण नामकर्म, नीला वर्ण नामकर्म, लाल वर्ण नामकर्म और सफेद वर्ण नामकर्म)।

४९. समचतुरस्रसंस्थान, ५०. वज्रवृषभनाराचसंहनन, ५१. अगुरुलघु, ५२. परघात, ५३. उच्छ्वास, ५४. आतप, ५५. उद्योत, ५६. प्रशस्त विहायोगति, ५७. त्रस, ५८. बादर, ५९. पर्याप्ति, ६०. प्रत्येक शरीर, ६१. स्थिर, ६२. शुभ, ६३.

सुभग, ६४. सुस्वर, ६५. आदेय, ६६. यश:कीर्ति, ६७. निर्माण और ६८. तीर्थंकरत्व।

भेद विवक्षा से ये ६८ पुण्य प्रकृतियाँ हैं और अभेद विवक्षा से ४२ पुण्य प्रकृतियाँ हैं; क्योंकि वर्णादिक के १६ भेद और शरीर नामकर्म के अंतर्गत ५ बंधन तथा ५ संघात – इसप्रकार कुल २६ प्रकृतियाँ घटाने से ४२ प्रकृतियाँ रहती हैं।

पाप प्रकृतियाँ १०० हैं, जो निम्नप्रकार हैं –

१-४७. घातिया कर्मों की सर्व प्रकृतियाँ, ४८. नीच-गोत्र, ४९. असाता वेदनीय, ५०. नरकायु, ५१. नरकगति, ५२. नरकगत्यानुपूर्वी, ५३. तिर्यंचगति, ५४. तिर्यंचगत्यानुपूर्वी, ५५-५८. एकेन्द्रिय से चतुरिन्द्रिय तक चार जाति (एकेन्द्रियजाति नामकर्म, द्वीन्द्रियजाति नामकर्म, त्रीन्द्रियजाति नामकर्म, चतुरिन्द्रियजाति नामकर्म), ५९ से ६३. पाँच संस्थान (न्यग्रोधपरिमंडलसंस्थान नामकर्म, स्वातिसंस्थान नामकर्म, कुब्जकसंस्थान नामकर्म, वामनसंस्थान नामकर्म और हुण्डकसंस्थान नामकर्म), ६४ से ६८. पाँच सहंनन (वज्रनाराच संहनन नामकर्म, नाराच संहनन नामकर्म, अर्द्धनाराच संहनन नामकर्म, कीलक संहनन नामकर्म और असंप्राप्तसृपाटिका संहनन नामकर्म)।

६९-८८. वर्णादिक २० प्रकार (कोमल स्पर्श नामकर्म, कठोर स्पर्श नामकर्म, गुरु स्पर्श नामकर्म, लघु स्पर्श नामकर्म, शीत स्पर्श नामकर्म, उष्ण स्पर्श नामकर्म, स्निग्ध स्पर्श नामकर्म और रूक्ष स्पर्श नामकर्म, खट्टा रस नामकर्म, मीठा रस नामकर्म, कडुआ रस नामकर्म, कषायला रस नामकर्म, चरपरा रस नामकर्म, सुगंध नामकर्म, दुर्गंध नामकर्म, काला वर्ण नामकर्म, पीला वर्ण नामकर्म, नीला वर्ण नामकर्म, लाल वर्ण नामकर्म और सफेद वर्ण नामकर्म), ८९. उपघात, ९०. अप्रशस्त विहायोगति, ९१. स्थावर, ९२. सूक्ष्म, ९३. अपर्याप्ति, ९४. साधारण, ९५. अस्थिर, ९६. अशुभ, ९७. दुर्भग, ९८. दु:स्वर, ९९. अनादेय और १००. अयश:कीर्ति।

भेद विवक्षा से ये सब १०० पाप प्रकृतियाँ हैं और अभेद विवक्षा से ८४ हैं; क्योंकि वर्णादिक के १६ उपभेद घटाने से ८४ रहते हैं।

इनमें से भी सम्यक्-मिथ्यात्वप्रकृति तथा सम्यक्त्वमोहनीयप्रकृति – इन दो प्रकृतियों का बंध नहीं होता; अत: इन दो को कम करने से भेदविवक्षा से ९८ और अभेदविवक्षा से ८२ पाप प्रकृतियों का बन्ध होता है; परन्तु इन दोनों प्रकृतियों की सत्ता तथा उदय होता है; इसलिए सत्ता और उदय की भेद विवक्षा से १०० तथा अभेदविवक्षा से ८४ प्रकृतियाँ होती हैं।

ये सभी पुण्य-पाप प्रकृतियाँ बंधरूप हैं। यही कारण है कि इन्हें यहाँ बंधाधिकार

में रखा गया है।

पुण्य और पाप के संदर्भ में एकत्व का जो भाव; यहाँ दोनों को बंधाधिकार में रखकर व्यक्त किया गया है; उस भाव का पोषक कथन आचार्य कुन्दकुन्द कृत प्रवचनसार में इसप्रकार प्राप्त होता है –

ण हि मण्णदि जो एवं णत्थि विसेसो त्ति पुण्णपावाणं।
हिंडदि घोरमपारं संसारं मोहसंछण्णो।।७७।।

(हरिगीत)

पुण्य-पाप में अन्तर नहीं है – जो न माने बात ये।
संसार-सागर में भ्रमें मद-मोह से आच्छन्न वे।।७७।।

इसप्रकार जो व्यक्ति 'पुण्य और पाप में कोई अन्तर नहीं है' – ऐसा नहीं मानता है अर्थात् उन्हें समानरूप से हेय नहीं मानता है; वह मोह से आच्छन्न प्राणी अपार घोर संसार में अनन्त काल तक परिभ्रमण करता है।

समयसार के पुण्य-पाप अधिकार में पुण्य और पाप – दोनों को बेड़ियाँ बताया गया है। पुण्य को सोने की बेड़ी और पाप को लोहे की बेड़ी कहा गया है। बेड़ी किसी भी धातु की क्यों न बनी हो, है तो बंधन ही।

इसप्रकार घातिकर्मों की ४७ और अघातिकर्मों की १०१ – कुल मिलाकर आठ कर्मों की १४८ प्रकृतियाँ होती हैं।

इन १४८ प्रकृतियों में पुण्य प्रकृतियाँ ६८ और पाप प्रकृतियाँ १०० होती हैं।

यहाँ एक **प्रश्न** संभव है कि पुण्य प्रकृतियाँ ६८ और पाप प्रकृतियाँ १०० – इसप्रकार तो कुल प्रकृतियाँ १६८ हो गईं; जबकि कुल प्रकृतियाँ तो १४८ ही हैं।

उत्तर – आठ प्रकार के स्पर्श, पाँच प्रकार के रस, दो प्रकार की गंध और पाँच प्रकार का रंग (वर्ण) – ये २० प्रकृतियाँ पुण्य रूप भी होती हैं और पापरूप भी। इसकारण बीस अधिक हो गई हैं।

तीर्थंकर नामकर्म जैसी पुण्य प्रकृति को बंधाधिकार में रखकर आचार्यदेव ने यह स्पष्ट कर दिया है कि लौकिक दृष्टि से पुण्य कितना ही महान क्यों न हो, है तो आखिर आस्रव भाव ही, बंध भाव ही।

तात्पर्य यह है कि तीर्थंकर प्रकृति के प्रति भी व्यामोह ठीक नहीं, उचित नहीं; क्योंकि **वह भी आस्रवभाव है, बंधभाव है। आस्रव और बंध में व्यामोह को उचित नहीं माना जा सकता।।२५-२६।।**

इसप्रकार यहाँ आठवाँ अध्याय समाप्त होता है। ●

छहढाला प्रवचन

सम्यग्ज्ञान की महिमा व तत्त्वाभ्यास की प्रेरणा

कोटि जन्म तप तपैं ज्ञान बिन कर्म झरैं जे।
ज्ञानी के छिन मांहि त्रिगुप्ति तैं सहज टरैं ते।।
मुनिव्रत धार अनन्त बार ग्रीवक उपजायो।
पै निज आतम ज्ञान बिना सुख लेश न पायौ।।५।।
तातैं जिनवर कथित, तत्त्व अभ्यास करीजै।
संशय विभ्रम मोह त्याग, आपौ लख लीजै।।
यह मानुष पर्याय सुकुल, सुनिवौ जिनवानी।
इह विधि गये न मिलै, सुमणि ज्यों उदधि समानी।।६।।

(सुप्रसिद्ध आध्यात्मिक विद्वान पण्डित दौलतरामजीकृत छहढाला की चौथी ढाल पर गुरुदेवश्री के प्रवचन पाठकों के लाभार्थ यहाँ प्रस्तुत किये जा रहे हैं।)

(गतांक से आगे....)

भगवान के कहे गये नव तत्त्वों को किसप्रकार पहिचाने – इसका वर्णन द्वितीय और तृतीय ढाल में विस्तार से आ गया है, उसके अभ्यास से आत्मा के सच्चे स्वरूप को पहिचानना चाहिए।

देखो ! भगवान के कहे हुए तत्त्व के अभ्यास का फल है – 'आपो लख लीजे' अर्थात् अन्तर्मुख होकर आत्मा का स्वरूप अनुभव में लेना। तत्त्व के अभ्यास का फल तो आत्मा का अनुभव करना है।

मैं चैतन्यमूर्ति हूँ, शरीरादि अजीव से भिन्न और रागादि आस्रवों से जुदा हूँ, मेरा चैतन्य तत्त्व अन्य सब तत्त्वों से भिन्न है, मैं ही आनन्द मूर्ति हूँ – इसप्रकार ज्ञानादि अनन्त गुणों के चैतन्य पिण्ड को लक्ष्य में लेकर 'यह मैं हूँ' – ऐसा अनुभव होने पर सम्यग्ज्ञान होता है।

अहा ! ऐसे आत्मा के ज्ञान में अलौकिक सुख है। इसलिए कहते हैं कि 'आपो लख लीजे'। आत्मा के ज्ञान बिना जैन तत्त्व का सच्चा ज्ञान नहीं होता। भगवान ने आत्मा का स्वरूप पर से भिन्न और राग से पार उपयोगमय बताया है, उसकी

सन्मुखता ही धर्म का मूल स्तंभ है। भाई, तेरी महान चीज तेरे में पड़ी है, उस पर दृष्टि कर, आत्म-सन्मुखता बिना बाह्य दृष्टि से जीव चाहे जितना शुभ भाव करे, उससे स्वर्ग मिलेगा, किन्तु आत्मा का सुख कदापि नहीं मिलेगा।

जीवादि नवतत्त्वों को भली प्रकार से पहिचानना चाहिए, इसके लिए सत्संग और जिनवाणी का अभ्यास कर। जिनवाणी कहती है कि हे जीव ! अपने आत्मा के सन्मुख हो जा भूतार्थरूप अपने शुद्ध स्वभाव का आश्रय कर, यही सच्चा तत्त्वार्थ श्रद्धानरूप सम्यग्दर्शन है। अजीव को अपने से भिन्न वस्तु जाने तो अजीव की श्रद्धा की – ऐसा कहा जाय। पुण्य-पाप, आस्रव-बंध को दु:खरूप जानकर उनका आश्रय छोड़े तो पुण्य-पाप और आस्रव-बंधतत्त्व की श्रद्धा हुई – ऐसा कहा जाय। इसप्रकार शुद्धात्मा की सन्मुखता से ही नवतत्त्व की सच्ची श्रद्धा होती है।

तत्त्वार्थ श्रद्धान का कार्य तो यह है कि भेदज्ञान से शुद्धात्मा का आश्रय करके पर और विकार का आश्रय छोड़ना। आनन्द रस का समुद्र आत्मा इतना महान है – ऐसा जाने और फिर उसमें उपयोग न लगे – ऐसा कैसे बने ? अहा ! वीतराग कथित आत्मा अपनी ही वस्तु है, उसको न जाने तो इस अनन्त-भव-समुद्र में यह मनुष्य भव कहाँ जाकर डूबेगा ? अनन्तकाल से आत्मा एक भव में से दूसरे भव में जाता है, आत्मा को पहिचानकर मोक्ष पावे तभी भवभ्रमण मिटेगा। फिर मोक्ष में सिद्ध भगवानपने अनन्त-अनन्त काल तक रहेगा। बापू ! ऐसा आर्य मनुष्यपना, श्रावक का उत्तम कुल और वीतरागी जिनवाणी का श्रवण तुझे महाभाग्य से मिला है, ऐसा सुयोग तो चिन्तामणि के मिलने जैसा है, उसे तू व्यर्थ मत गंवा।

६ वर्ष की छोटी उम्र में श्रीमद् राजचन्द्रजी कहते हैं –

बहु पुण्य-पुंज प्रसंग से शुभ देह मानव का मिला।
तो भी अरे भवचक्र का फेरा न एक कभी टला।।
सुख प्राप्ति हेतु प्रयत्न करते सुख जाता दूर है।
तू क्यों भयंकर भावमरण प्रवाह में चकचूर है।।

बापू ! वर्तमान में अनन्त काल के दु:ख से छूटकर सुख की प्राप्ति करने का यह अवसर है, अत: तू सुख के कारणरूप सम्यग्ज्ञान को प्रकट कर ले। यहाँ 'सुयोग' रूप में आत्महित में निमित्तरूप तीन बातें ली हैं। लाखों, करोड़ों रुपया मिले,

बंगला मोटर मिले, सुन्दर शरीरादि मिले, उसको यहाँ सुयोग नहीं कहा, किन्तु आर्य मनुष्यपना, श्रावक का उत्तम कुल और वीतराग-वाणी का श्रवण मिला, उसको सुयोग कहा है। जो आत्मा की पहिचान में निमित्तरूप हो ऐसे योग को सुयोग कहा है। उसके लिए पैसा या शरीर का सुन्दरता आदि की आवश्यकता नहीं है। भले गरीब हो, कुरूप हो, परन्तु वीतराग-वाणी से, जैनधर्म के संस्कार से, आत्महित कर सकता है। देखो न, अमेरिका आदि देशों में और यहाँ भारत में भी अनेक जीवों के पास आज करोड़ों रुपया दिखाई पड़ता है, किन्तु सच्चे जैनधर्म का श्रवण अर्थात् जिससे आत्मा का हित हो, वह मिलना अति दुर्लभ है। ऐसा अवसर तुझे मिला है तो अरबों रुपयों के योग की अपेक्षा यह सुयोग धन्य है – ऐसा समझ।

ऐसा सुयोग पाकर अब तू संसार की झंझट में, लोगों को प्रसन्न करने में, मत रुक, किन्तु शीघ्र ही आत्मा को पहिचान कर अपना हित कर ले। अमेरिका आदि में बाह्य वैभव चाहे जितना हो, परन्तु आत्मा के ज्ञान बिना उसमें लेश मात्र भी सुख नहीं मिलता। अध्यात्मविद्या जो भारत का वास्तविक वैभव है, वही सुख का कारण है। अत: उसका अभ्यास करके आत्मा को पहिचानो।

अहा ! जो वाणी गणधरदेव आदर से सुनते हैं, जिसे सुनने के लिए स्वर्ग के इन्द्र भी मनुष्यलोक में उतरते हैं, जिसे चक्रवर्ती भी अत्यन्त भक्ति से सुनते हैं, आत्मा का अद्भुत स्वरूप बतानेवाली ऐसी जिनवाणी तुझे वर्तमान में यहाँ सुनने को मिली तो उसका चिन्तवन करके, वस्तुस्वरूप समझकर, चैतन्यस्वरूप आत्मा का सम्यग्दर्शन और सम्यग्ज्ञान कर ले। ऐसा महान सुयोग मिला है कि उसे आत्मज्ञान से सफल कर। यदि तत्त्वदृष्टि नहीं की और जीवन अज्ञान में तथा विषयों में गंवा दिया तो हाथ में आया हुआ मनुष्यभव रूपी उत्तम रत्न खोकर तू पछताएगा।

बापू ! धन-कुटुम्ब-शरीर आदि की दरकार छोड़कर जीवन में आत्मा की दरकार कर। आत्मा का सम्यग्दर्शन-ज्ञान कैसे हो, उसके प्रयत्न में लग।

जिसप्रकार कोई हरा वृक्ष जलकर राख बन जाए और उस राख का किसी नदी में फेंक दे अथवा हवा में चारों तरफ बिखेरकर उड़ा दे, बाद में वे ही सब रजकण पुन- एकत्रित होकर वैसा ही वृक्ष बनावें – ऐसा अनंत काल में भी होना जितना कठिन है, उसीप्रकार संसार में कल्पवृक्ष जैसा यह मनुष्यपना पाकर यदि आत्मा का

भान नहीं किया और अज्ञान से विषयों में ही उसे गंवा दिया तो भवसमुद्र में आत्मा ऐसा डूब जायेगा कि फिर से अनंत काल में ऐसा मनुष्यपना मिलना कठिन हो जायेगा। त्रसपने का काल भी थोड़ा (दो हजार सागरोपम मात्र) है, जिसमें कीड़ी-मकोड़ी आदि असंज्ञी पर्यायें भी सम्मिलित हैं, उनमें मनुष्य अवतार तो अत्यल्प होते हैं। त्रस के उस मर्यादित काल में मनुष्य होकर या तो आत्मा को साधकर मोक्ष पा जाय, अन्यथा त्रस पर्याय का काल पूर्ण होने पर निगोदादि एकेन्द्रिय स्थावर पर्याय में चला जायेगा। फिर वहाँ से अनन्तकाल में भी निकलना कठिन है। अत: हे जीव ! तू शीघ्र चेत...चेत...चेत...।

रे ! मनुष्य होकर भी सच्ची जिनवाणी सुनने को मिलना कितना कठिन है। जिनवाणी के नाम पर भी आजकल तो अनेकों जगह विपरीत उपदेश चल रहा है, पानी में आग लगने जैसा हो गया है, क्या किया जाय। ऐसे समय में भी तुझे ऐसी अमृत जैसी मीठी जिनवाणी मिली, वीतरागी आत्मस्वरूप को बतानेवाली वाणी तो मिली, तो अब आलस्य छोड़कर आत्मा की पहिचान करके इस उत्तम योग को सफल कर ले। महावीर प्रभु के शासन को पाने का सच्चा लाभ ले ले।

अज्ञान दशा में जीव का अनन्तकाल तो एकेन्द्रियपने में गया, उसमें से निकलकर कीड़ी आदि त्रस पर्याय पाना कठिन, फिर संज्ञीपना और मनुष्यपना पाना कठिन, पश्चात् भारत जैसा आर्यदेश मिलना कठिन, उसमें भी श्रावक कुल और जैनधर्म मिलना कठिन, फिर आत्मस्वरूप समझाने वाली वाणी जिनवाणी का श्रवण, समयसारादि परम अध्यात्म शास्त्रों का श्रवण मिलना और भी कठिन है। ऐसा दुर्लभ योग आज तुझे भाग्य से मिला है और आत्महित की बुद्धि भी जागृत हुई है जो अब ऐसे अवसर में तू मत चूक, आत्मा को पहिचान कर सम्यग्ज्ञान उत्पन्न कर ले, जिससे तेरे भव का अंत आ जाय और तुझे परम सुख की प्राप्ति हो जाय।

(क्रमश:)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो – वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें –
वेबसाईट – www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र–श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph.: 022-26130820, 26104912, E-Mail- info@vitragvani.com

नियमसार प्रवचन –

मनोगुप्ति का स्वरूप

परमपूज्य सर्वश्रेष्ठ दिगम्बराचार्य कुन्दकुन्द के प्रसिद्ध परमागम नियमसार के शुद्धभावाधिकार की 66वीं गाथा पर हुये आध्यात्मिकसत्पुरुष श्री कानजीस्वामी के अध्यात्मरस गर्भित प्रवचनों का संक्षिप्त सार यहाँ दिया जा रहा है।

गाथा मूलत: इसप्रकार है –

कालुस्समोहसण्णारागद्दोसाइअसुहभावाणं।
परिहारो मणुगुत्ती ववहारणयेण परिकहियं ।।६६ ।।

(हरिगीत)

मोह राग द्वेष संज्ञा कलुषता के भाव जो।
इन सभी का परिहार मनगुप्ति कहा व्यवहार से ।।६६ ।।

कलुषता, मोह, संज्ञा, राग, द्वेष आदि अशुभ भावों के परिहार को व्यवहारनय से मनोगुप्ति कहा है।

(गतांक से आगे....)

मुनि के मुनिपने के योग्य शुद्धपरिणति के साथ वर्त्तता हुआ जो हठरहित मनआश्रित, वचनआश्रित अथवा कायआश्रित शुभोपयोग है, उसको व्यवहारगुप्ति कहते हैं, कारण कि शुभोपयोग में मन, वचन, काय के साथ अशुभोपयोगरूप जुड़ान नहीं है। शुद्धपरिणति न हो वहाँ शुभोपयोग हठसहित होता है, उसे तो व्यवहारगुप्ति भी नहीं कहते।

छठे गुणस्थानवर्ती मुनि को आकाश ही एक वस्त्र है। उनको आत्मा के भान और रमणतासहित शुद्धवीतराग परिणति वर्त्तती है, उस परिणति के साथ मन-वचन-काय-आश्रित हठरहित सहज शुभविकल्प होता है, उसे व्यवहारनय से गुप्ति कहते हैं। चैतन्य ज्ञाता-दृष्टा आत्मा के भान बिना अकेला शुभभाव तो व्यवहार से भी गुप्ति नहीं कहा जाता, क्योंकि जहाँ आत्मभानसहित शुद्धपरिणति न हो वहाँ शुभभाव हठसहित ही होता है – सहज नहीं। शुभभाव कहो, विभाव कहो, व्यवहारगुप्ति कहो, सब एक ही है। अन्तर शुद्धपरिणमन हो तब उस विकल्प को

व्यवहार कहा जाय, अन्यथा उसे व्यवहार भी नहीं कहा जा सकता।

शुभभाव अशुभभाव को तो रोकता है न?

भाई! क्या अशुभभाव आनेवाला था और उसे रोका गया है? वास्तव में तो मुनिदशा की उस भूमिका में शुभभाव होने पर उतने अंश में अशुभभाव उत्पन्न ही नहीं होता – इसलिए अशुभ को रोका ऐसा व्यवहार से कहा जाता है।

क्रोध, मान, माया और लोभ नामक चार कषायों से क्षुब्ध हुआ चित्त कलुषता है और वह मुनि के नहीं होती। उपशमरस का पान करनेवाले मुनि के तीव्र क्रोधादि कलुषता नहीं होती। मुनि के मोह अर्थात् मिथ्यात्व-आत्मा आदि तत्त्वों का अभाव नहीं होता। चार संज्ञा – आहार, भय, मैथुन, परिग्रह मुनि के नहीं होतीं।

शुभराग और अशुभराग – इसतरह दो प्रकार का राग होता है। विषय-कषाय का भाव तो अशुभराग है और व्यवहारसमिति-गुप्ति, देव-गुरु-शास्त्र के प्रति राग शुभराग है। एक अप्रशस्त है और दूसरा प्रशस्त है – दोनों ही आस्रव हैं। इन दो में से अशुभ परिणाम का – राग का परिहार तो व्यवहारगुप्ति है और शुभराग का भी परिहार अर्थात् निर्विकल्प स्वरूप में लीन होना निश्चयगुप्ति है।

असह्यजनों के प्रति अथवा असह्य पदार्थसमूह के प्रति वैर का परिणाम वह द्वेष है। मुनि के प्रति विरोधीजन कठोर शब्द कहें, कर्ण पीड़ाकारक दुर्वचन कहें, तथापि मुनि को खेद अथवा वैर का भाव नहीं होता। मुनि समझते हैं वे जीव अपनी रुचि अनुसार भाव करते हैं तो करें, उनसे मेरी आत्मा को कोई हानि होनेवाली नहीं है; मैं तो चिदानन्दमूर्ति ज्ञान-स्वभावी हूँ – मेरे में वे गालियाँ प्रवेश नहीं कर जातीं। असह्यजनों में जीव को और असह्य पदार्थों में अजीव पदार्थ लिया है। मुनि के शरीर में तीक्ष्ण भाला जैसा काँटा लगे तो भी उसके प्रति उन्हें द्वेषभाव नहीं होता। मुनि तो अकषाय शान्तभाव में झूलते होते हैं। कोई विरोधी उन्हें अग्नि की चिता या बर्फ की शिला पर डाल दें तथापि द्वेषभाव नहीं होता। मुनि के अन्दर स्वभाव की श्रद्धा-ज्ञानसहित स्थिरता से अमृत का झरना झरता है। अन्दर त्रिकालीस्वभाव और वर्तमान पर्याय के बीच में मिथ्यात्वरूपी ताला पड़ा था, वह स्वभाव के भान से खेलने पर अन्दर से शान्ति का फव्वारा फट गया है। अन्दर चैतन्य-पिटारा

अमृत से भरपूर पड़ा है, वह पिटारा राग के साथ एकत्वबुद्धि के कारण बन्द था, उसको वीतरागी मुनियों ने राग से भिन्न आत्मा को जानकर उद्घाटित कर दिया है।

मिथ्यात्व को शास्त्र में अशुभभाव कहा है। जहाँ तक मिथ्यात्व रहता है, वहाँ तक वास्तव में अन्य अशुभभाव भी छूटते नहीं हैं। दर्शनमोह के अभाव बिना व्यवहारसमिति अथवा गुप्ति नहीं हो सकती, इसीलिए व्यवहारगुप्ति की प्रथम गाथा में मुनि के मोह का परिहार लिया है।

संसार के कारणों से आत्मा का गोपन करना वह गुप्ति है। अशुभभाव तथा दया, दान, व्रत, व्यवहारसमिति-गुप्ति इत्यादि शुभभाव-आस्रव हैं – धर्म नहीं। आत्मा के भानसहित अन्दर वीतरागी एकाग्रता प्रकट करना – वही धर्म है।

अशुभ का त्याग और वर्तमान परिणाम में जो शुभभाव वर्तता है वह व्यवहारगुप्ति है, बाकी तो भावपाप और भावपुण्य दोनों आस्रव ही हैं। स्वभाव के भान की भूमिका में अशुभ छूटकर, जो मन-वचन-काय की तरफ के परिणाम के गोपन का शुभविकल्प है उसे व्यवहारगुप्ति कहते हैं। इस गुप्ति का अंश अपनी भूमिका प्रमाण पाँचवें गुणस्थानवाले के भी होता है।

(वसन्ततिलका)

गुप्तिर्भविष्यति सदा परमागमार्थ-
चिंतासनाथमनसो विजितेन्द्रियस्य।
बाह्यान्तरंगपरिषंगविवर्जितस्य
श्रीमज्जिनेन्द्रचरणस्मरणान्वियतस्य ।।९१ ।।

(रोला)

जो जिनेन्द्र के चरणों को स्मरण करे नित।
बाह्य और आन्तरिक ग्रंथ से सदा रहित हैं।।
परमागम के अर्थों में मन चिन्तन रत है।
उन जितेन्द्रियों के तो गुप्ति सदा ही होगी।।९१।।

जिसका मन परमागम के अर्थों के चिन्तनयुक्त है, जो विजितेन्द्रिय है (अर्थात् जिसने इन्द्रियों को विशेषरूप से जीता है), जो बाह्य तथा अभ्यन्तर संग रहित है और जो श्री जिनेन्द्रचरण के स्मरण से संयुक्त है, उसे सदा गुप्ति होती है।

श्री समयसार, प्रवचनसार, नियमसार, पंचास्तिकाय, षट्खण्डागम इत्यादि

शास्त्र जो महासमर्थ दिगम्बर मुनियों ने रचे हैं, उन्हें परमागम कहते हैं। मुनि का मन इस परमागम के चिंतन से युक्त है अर्थात् वह कुशास्त्र की ओर नहीं जाता। दिगम्बर शास्त्रों के अतिरिक्त अन्य शास्त्रों को परमागम नहीं कहते। यहाँ चरणानुयोग आदि के सभी शास्त्र जो परमात्मतत्त्व की भावनावाले सन्तों द्वारा रचित हैं, वे परमागम हैं।

जो मुनि विजितेन्द्रिय है, जिसने विशेषपने इन्द्रियों को जीता है, जो बाह्य संग अर्थात् वस्त्र-पात्रादि तथा अभ्यन्तर संग अर्थात् मिथ्यात्वादि चौदह अभ्यन्तर परिग्रह – इसप्रकार सर्व परिग्रह से रहित है, और जो श्रीजिनेन्द्रदेव के चरण के स्मरण से संयुक्त है अर्थात् भगवान् जिनेन्द्रदेव वस्तु का स्वरूप ऐसा कहते हैं, भगवान की आज्ञा ऐसी है, भगवान कथित निश्चय और व्यवहार का स्वरूप ऐसा है – इसप्रकार जिसका मन सदा जिनचरण-स्मरणयुक्त है उसी को सदा गुप्ति होती है। आत्मा के भान बिना नग्न रहनेवाले साधु नहीं कहे जा सकते। यहाँ जो वीतराग के चरणस्मरणयुक्त अर्थात् वीतराग की आज्ञा के विचारयुक्त है उसको जो वीतराग परिणति प्रकट हुई है वह निश्चय है और उसके साथ जो विकल्प है वह व्यवहार है। •

श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के खाते में

बैंक में पैसे जमा कराने वाले महानुभावों से

अत्यन्त आवश्यक नम्र निवेदन

हमारे पास अनेकों इसप्रकार की राशियाँ जमा हैं, जिनके स्रोत ज्ञात न होने, मालूम न होने के कारण उनका यथायोग्य जमा-खर्च सम्भव नहीं हो पा रहा है।

आपने यदि कोई राशि हमारे खाते में जमा करवाई हो व जिसकी रसीद आपको न मिली हो तो कृपया तुरन्त हमें सूचित करें ताकि उसे उपयुक्त खाते में जमा करके उसकी रसीद आपको भिजवाई जा सके। राशि जमा कराने हेतु संस्था के खाते का विवरण निम्नानुसार है –

Name of Account	: **पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट**
Bank A/c No.	: 0247000100024619
Accounts Type	: Saving A/c
Name & Address of Bank	: PNB Bank, Bapu Nagar Branch
Bank Micr Code	: 302024004
Bank IFSC Code	: PUNB0024700
PAN NO.	: AAATP2595H

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, ए-4, बापूनगर, जयपुर-302015 (राज.) फोन : (0141)2705581, 2707458 **E-mail - ptstjaipur@yahoo.com**

ज्ञान गोष्ठी

सायंकालीन तत्त्वचर्चा के समय विभिन्न मुमुक्षुओं द्वारा
पूज्य स्वामीजी से पूछे गये प्रश्न और स्वामीजी द्वारा दिये गये उत्तर

प्रश्न : समयसार की ग्यारहवीं गाथा में शुद्धनय का अवलम्बन लेने को कहा, किन्तु शुद्धनय तो ज्ञान का अंश है – पर्याय है; क्या उस अंश का अवलम्बन लेने से सम्यक्त्व होगा ?

उत्तर : अकेले अंश को पकड़कर उसके ही अवलम्बन में जो अटक गया, उसे तो शुद्धनय है ही नहीं। ज्ञान के अंश को अन्तर में लगाकर जिसने त्रिकाली द्रव्य के साथ अभेदता की, उसे ही शुद्धनय होता है और ऐसी अभेददृष्टि हुई तभी शुद्धनय का अवलम्बन लिया – ऐसा कहा जाता है अर्थात् शुद्धनय का अवलम्बन – ऐसा कहने पर उसमें भी द्रव्य-पर्याय की अभेदता की बात है। परिणति अन्तर्मुख होने पर द्रव्य में अभेद हुई और जो अनुभव हुआ, उसका नाम शुद्धनय का अवलम्बन है, उसमें द्रव्य-पर्याय के भेद का अवलम्बन नहीं है। यद्यपि शुद्धनय स्वयं ज्ञान का अंश है, पर्याय है; परन्तु वह शुद्धनय अन्तर के भूतार्थस्वभाव में अभेद हो गया है अर्थात् वहाँ नय और नय का विषय जुदा नहीं रहा। जब ज्ञानपर्याय अन्तर में झुककर शुद्धद्रव्य के साथ अभेद हुई तब ही शुद्धनय हुआ। वह शुद्धनय निर्विकल्प है।

प्रश्न : शास्त्र में व्यवहार को भी प्रशंसनीय कहा है?

उत्तर : निश्चयनय से शुद्धात्मा की भावनावाले जीव को अर्थात् साधक जीव को जबतक पूर्ण वीतरागता प्रकट न हो तबतक निश्चय सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र के साथ जो व्यवहार सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्र अर्थात् सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की श्रद्धा, नव तत्त्व का ज्ञान और पंचमहाव्रत का आचरण है; उसको निश्चय का सहकारी जानकर प्रशंसनीय कहा है। उसे व्यवहार से मोक्षमार्ग भी कहा है, तथापि परमार्थ से तो वह बन्धमार्ग ही है; अत: निश्चय शुद्धात्मा की भावना के काल में वह व्यवहार प्रशंसा योग्य नहीं है। साधक जीव को पूर्ण वीतरागता न हो तबतक अर्थात् प्रथम अवस्था में व्यवहार श्रद्धा-ज्ञान-आचरण को प्रशंसनीय कहा है तो भी शुद्धात्मा की भावना के काल में प्रशंसा योग्य नहीं है।

प्रश्न : निश्चयनय और व्यवहारनय का परस्पर विरोध है या मैत्री?

उत्तर : निश्चयनय और व्यवहारनय में है तो विरोध ही, किन्तु दोनों साथ रहते है – इस अपेक्षा से मैत्री भी कही जाती है। जैसा सम्यग्दर्शन और मिथ्यादर्शन में विरोध है अर्थात् वे दोनों एकसमय भी साथ-साथ नहीं रह सकते, वैसा विरोध इन दोनों नयों में नहीं है। ये दोनों साथ-साथ रहते हैं, अत: मैत्री कही जाती है।

प्रश्न : आप व्यवहार को हेय कहते है, तो क्या व्यवहार है ही नहीं ?

उत्तर : व्यवहार है भले ही, परन्तु मोक्षमार्ग उसके आधार से नहीं है। व्यवहार के आधार से मोक्षमार्ग मानना तो परद्रव्य से लाभ मानने जैसा है। जिसप्रकार परद्रव्य है, इसलिये स्वद्रव्य है –ऐसी मान्यता में स्व-पर की एकताबुद्धिरूप मिथ्यात्व है; उसीप्रकार रागरूप व्यवहार है इसलिये निश्चय है – ऐसी मान्यता में स्वभाव और परभाव की एकताबुद्धिरूप मिथ्यात्व है। साधक को सुख के साथ किंचित् दु:ख भी है, दोनों धारायें (एक बढ़ती हुई और दूसरी घटती हुई) साथ ही वर्तती है; तो क्या वे दोनों परस्पर एक-दूसरे के कारण से हैं ? नहीं; दोनों साथ होने पर भी दु:ख है, इसलिये सुख है – ऐसा नहीं है; उसीप्रकार निश्चय और व्यवहार साथ होने पर भी व्यवहार है, इसलिए निश्चय है – ऐसा नहीं है। व्यवहार के आश्रय से बन्धन है और निश्चय के आश्रय से मुक्ति है – ऐसे दोनों भिन्न-भिन्न स्वरूप से वर्तते हैं।

प्रश्न : ज्ञानी तो व्यवहार को हेय मानता है, फिर भी ज्ञानी के व्यवहार का फल संसार क्यों ?

उत्तर : ज्ञानी का व्यवहार भी राग है और राग का फल संसार है। श्रावक को षट्आवश्यक का और मुनि को पंच महाव्रत का विकल्प आता है; उसको निश्चय का सहचर जानकर जिनवाणी में बहुत वर्णन किया गया है, परन्तु इस राग का फल संसार है – ऐसा कहा है। जो जीव इस शुभराग से लाभ मानता है अथवा शुभराग करते-करते धर्म हो जायेगा – ऐसा मानता है, वह तो मिथ्यादृष्टि है; अत: संसारभ्रमण करेगा ही।

प्रश्न : जिनवाणी में कथित व्यवहार का फल यदि संसार ही है, तो उसके कथन से क्या लाभ ?

उत्तर : निश्चय दर्शन-ज्ञान-चारित्र के साथ अपूर्णदशा के कारण राग की मन्दता में किस-किस प्रकार का मन्द राग होता है; चौथे, पाँचवे, छठे गुणस्थानों की भूमिका में राग की क्या स्थिति होती है; पूजा, भक्ति, अणुव्रत,महाव्रतादि होते हैं; उनका व्यवहार बताने के लिए जिनागम में उनका कथन किया गया है; परन्तु इस राग की मन्दता के व्यवहार का फल तो बन्धन और संसार ही है।

समाचार दर्शन -

आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का उद्घाटन संपन्न

जयपुर (राज.) : पण्डित टोडरमल सर्वोदय ट्रस्ट द्वारा ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में आयोजित 17वें आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर का उद्घाटन रविवार, दिनांक 18 अक्टूबर को श्री अशोकजी बड़जात्या, इन्दौर (अध्यक्ष-दिगम्बर जैन महासमिति) के करकमलों से हुआ।

इस अवसर पर आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री सुशीलकुमारजी गोदिका, जयपुर ने की। मुख्य-अतिथि के रूप में श्री दिलीपभाई शाह, मुम्बई एवं विशिष्ट-अतिथि के रूप में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल आदि अनेक विशिष्ट विद्वानों के साथ-साथ श्री आई.एस. जैन मुम्बई, श्री सूरजमलजी जैन रामगंजमंडी, श्री जैनबहादुरजी जैन कानपुर, श्री केशवदेवजी जैन कानपुर, श्री भरतजी भौरे, कारंजा, श्री महेन्द्रकुमारजी चौधरी भोपाल, श्री शांतिलालजी गंगवाल सी.ए. जयपुर, श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन जयपुर, श्री अजीतकुमारजी तोतुका जयपुर, श्री मनोजजी बंगेला सागर, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर आदि महानुभाव मंचासीन थे।

विशिष्ट अतिथियों के उद्बोधन के उपरान्त डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने टोडरमल स्मारक की रीति-नीतियों से अवगत कराते हुये संक्षेप में मार्मिक उद्बोधन दिया एवं प्रवचनसार पर प्रवचन का लाभ प्रदान किया।

संचालन श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर ने तथा मंगलाचरण सौरभजी शास्त्री ने किया। उद्घाटन सभा के पूर्व ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी घेवरचंदजी जैन, जयपुर के करकमलों से हुआ। उन्होंने अपने उद्बोधन में टोडरमल स्मारक से होनेवाले तत्त्वप्रचार की बहुत सराहना की। सभा मण्डप का उद्घाटन श्री शांतिलालजी विपिनजी गंगवाल परिवार ने तथा सभा मंच का उद्घाटन श्री ताराचंदजी सोगानी परिवार जयपुर ने किया।

डॉ. भारिल्ल के प्रवचन अब टाटा स्काई पर भी

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन प्रतिदिन प्रात: 7 से 7.30 बजे तक जिनवाणी चैनल पर प्रसारित किये जाते हैं। अब यह चैनल केबल के अतिरिक्त टाटा स्काई के चैनल नं.193, एयरटेल के 684 एवं वीडियोकॉन के 489 पर उपलब्ध है। सभी साधर्मीजन प्रवचनों का अवश्य लाभ लें।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 1 नवम्बर से 'समाधिमरण' विषय पर डॉ. भारिल्ल के प्रवचन प्रारम्भ हो रहे हैं।

दशलक्षण महापर्व सानन्द संपन्न

सार्वभौमिक एवं त्रैकालिक दशलक्षण महापर्व सम्पूर्ण देश-विदेश में दिनांक 18 से 27 सितम्बर, 2015 तक बड़ी धूमधाम से मनाया गया। पर्व के दौरान सभी स्थानों पर मंदिरों में पूजन-विधान, प्रवचन, प्रौढ़ एवं बालकक्षाओं की धूम रही। लगभग सभी स्थानों पर सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों के माध्यम से महती धर्म प्रभावना हुई। देश के कोने-कोने से प्राप्त समाचारों को यहाँ संक्षेप में प्रकाशित किया जा रहा है।

(1) दिल्ली : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर विश्वास नगर स्थित दि. जैन मंदिर में तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रात्रि में प्रवचनसार, सल्लेखना एवं पश्चाताप विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त प्रात: डॉ. वीरसागरजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित अनिलजी इंजी इन्दौर, पण्डित प्रद्युम्नजी मुजफ्फरनगर, पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली के प्रवचनों का भी लाभ मिला। प्रात: दशलक्षण विधान का भी आयोजन हुआ।

इस अवसर पर डॉ. भारिल्ल को **अध्यात्मदिवाकर** की उपाधि प्रदान कर सम्मानित भी किया गया।

आत्मार्थी ट्रस्ट : यहाँ गुरुदेवश्री के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा सल्लेखना एवं क्षमावाणी विषय पर दो दिन प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त आरम्भ के 4 दिनों तक ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री के प्रवचन हुये। साथ ही डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर द्वारा दोनों समय अष्टपाहुड, दोपहर में पण्डित रमेशचंदजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रवचनसार, ब्र. प्रज्ञाबेन व ब्र. रजनीबेन द्वारा रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये। सायंकाल श्रीमती स्वर्णलता जैन द्वारा 11 प्रतिमाओं पर विशेष कक्षा ली गई। स्थानीय विद्वानों में डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, पण्डित वकीलचंदजी जैन, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री के प्रवचनों का भी लाभ मिला। सायंकाल आत्मार्थी बालिकाओं द्वारा प्रवचन, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम भी हुये।

(2) हरदा (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर श्री शान्तिनाथ दिगम्बर जैन चैत्यालय में ब्र.अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना द्वारा दोनों समय दशलक्षण धर्म, समयसार कलश एवं मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला।

(3) सागर (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर परकोटा स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली द्वारा प्रात: दशलक्षण विधान के अतिरिक्त समयसार पर एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म व मोक्षमार्ग प्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में विदुषी लता जैन द्वारा दशलक्षण धर्म पर एवं रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर चर्चा हुई। रात्रि में

स्थानीय बालिकाओं/महिलाओं द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रम हुये।

(4) अहमदाबाद (गुज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर वस्त्रापुर स्थित दिगम्बर जैन मंदिर में पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन द्वारा प्रात: समयसार पर, दोपहर में तत्त्वचर्चा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म व विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: दशलक्षण मंडल विधान एवं रात्रि में पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ।

(5) जयपुर (राज.) : यहाँ दशलक्षण महापर्व के अवसर पर श्री टोडरमल स्मारक भवन में प्रात: दशलक्षण धर्म विधान के उपरान्त डॉ. श्रीयांसजी सिंघई द्वारा समयसार पर प्रवचन, दोपहर में ब्र. यशपालजी जैन द्वारा योगसार विषय पर कक्षा, सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व श्रीमती ज्योति सेठी द्वारा तत्त्वार्थसूत्र पर कक्षा, उपाध्याय वरिष्ठ के छात्रों द्वारा विभिन्न विषयों पर प्रवचन एवं रात्रि में पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल द्वारा मोक्षमार्गप्रकाशक के तृतीय अध्याय पर प्रवचन हुये। तत्पश्चात् उपाध्याय कनिष्ठ, वरिष्ठ के विद्यार्थियों व वीतराग विज्ञान महिला मंडल द्वारा ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ।

इसके अतिरिक्त निबंध प्रतियोगिता, चित्रकला प्रतियोगिता, जिनवाणी सज्जा प्रतियोगिता, तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता, वाद-विवाद प्रतियोगिता, चारगति के दु:ख विषय पर नाटक आदि कार्यक्रम भी हुये।

विधि-विधान के कार्य पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने उपाध्याय वरिष्ठ के छात्रों (रजत जैन व प्रांजल जैन) के सहयोग से संपन्न कराये।

(6) इन्दौर (म.प्र.) : यहाँ महापर्व के अवसर पर रामाशा मन्दिर में पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील जयपुर द्वारा प्रात: द्रव्यसंग्रह पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक व दशलक्षण धर्म पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। दोपहर में विदुषी प्रतीति पाटील जयपुर द्वारा तत्त्वार्थसूत्र की कक्षा ली गई।

ओम विहार स्थित दिगम्बर जैन मन्दिर में विदुषी प्रतीति पाटील जयपुर द्वारा प्रात: दशलक्षण धर्म पर एवं रात्रि में रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर प्रवचन हुये। सायंकाल पण्डित निकुंजजी शास्त्री खड़ैरी द्वारा बालकक्षा ली गई।

(7) ब्रेम्पटन (कनाडा) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

प्रतिदिन प्रात: 3 घंटे पूजन व 1.5 घंटे तत्त्वार्थसूत्र के एक-एक अध्याय पर अर्थ सहित मार्मिक विवेचन। दोपहर में प्रतिदिन अमेरिका एवं कनाडा के अनेक नगरों के आत्मार्थियों हेतु बारह भावनाओं पर विशेष प्रवचन। सायंकाल जिनेन्द्र भक्ति व दशलक्षण धर्म पर प्रवचन। लगभग 100-100 कि.मी. दूर से आकर लोगों ने धर्मलाभ लिया। 200 से अधिक लोग लाभान्वित।

(8) अजमेर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर वीतराग-विज्ञान भवन में डॉ. दीपकजी

जैन 'वैद्यरत्न' द्वारा प्रात: समयसार पर, दोपहर में वर्तमान में जीवदया पालन विषय पर तथा सायंकाल अध्यात्मधाम ऋषभायतन में दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला।

सीमंधर जिनालय में पण्डित निखिलजी शास्त्री मेरठ द्वारा एवं ऋषभायतन में पण्डित अभयजी जैन ग्वालियर द्वारा दशलक्षण मण्डल विधान कराया गया। ऋषभायतन में महिला मण्डल के सहयोग से सांस्कृतिक कार्यक्रम भी कराये गये। **– नरेश जैन लुहाड़िया**

(9) कोटा (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर इन्द्रविहार स्थित सीमंधर जिनालय में पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड द्वारा समयसार व दशलक्षणधर्म पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

रात्रि में आचार्य कुन्दकुन्द कहान पाठशाला के बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ। पाठशाला के बच्चों ने भक्तामर पर आधारित अमरस्तवन व अकलंक धर्म प्रभावना नाटक का मंचन किया तथा वर्तमान समय के ज्वलंत विषय 'सल्लेखना आत्महत्या है या धर्म है' को अदालत के रूप में अनेक जैन शास्त्रों के उद्धरणों एवं अनेक तर्क-वितर्क के माध्यम से 'सल्लेखना धर्म ही है' इस सत्य को स्थापित किया।

इसकी रूपरेखा श्रीमती सीमा हरसौरा व पण्डित अभिलाष शास्त्री ने तैयार की तथा मधु पाटनी, आशा सौगानी व ज्योति पटवारी ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया। **– मधु पाटनी, मंत्री**

(10) बैंगलोर : यहाँ पर्व के अवसर पर पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर द्वारा प्रात: समयसार एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात:काल मंगलार्थी संदीप जैन बैंगलोर द्वारा दशलक्षण मंडल विधान कराया गया।– रमेश भंडारी

(11) वाशिम (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर दिगम्बर जैन मंदिर जवाहर कॉलोनी में पण्डित प्रवीणजी शास्त्री बांसवाड़ा द्वारा प्रात: समयसार पर, दोपहर में पंचलब्धि पर एवं सायंकाल मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रात: पूजन-विधान, सायंकाल जिनेन्द्र-भक्ति एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। बालकक्षा श्रीमती प्रेक्षा जैन द्वारा एवं अन्तिम चार दिन पण्डित प्रवीणजी द्वारा संस्कृत की कक्षा भी ली गई।

(14) औरंगाबाद (महा.) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा समयसार एवं जैनधर्म के विभिन्न मूल सिद्धान्त पर प्रवचनों का लाभ मिला। साथ ही हजारों रुपयों का साहित्य घर-घर पहुँचा।

(15) ललितपुर (उ.प्र.) : यहाँ नझाई बाजार स्थित सीमंधर जिनालय में पण्डित संजयजी सेठी जयपुर द्वारा प्रात: समयसार पर, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर एवं सायंकाल दश धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। **– ऋषभ टडैया**

(16) उज्जैन (म.प्र.) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री उदयपुर द्वारा प्रात: समयसार पर, दोपहर में तत्त्वार्थसूत्र पर एवं सायंकाल रत्नकरण्डश्रावकाचार के

आधार पर दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। प्रातः पूजन-विधान एवं सायंकाल बालकक्षा एवं रात्रि में भक्तामर पर कक्षा ली गई। **– जम्बू धवल**

(17) ग्राम कानपुर-उदयपुर (राज.) : यहाँ पर्व के अवसर पर डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री एवं पण्डित ज्ञायकजी शास्त्री द्वारा प्रातः पूजन विधि पर और सायंकाल दशलक्षण धर्म पर प्रवचनों का लाभ मिला। इसके अतिरिक्त बालकक्षा एवं रात्रि में सांस्कृतिक कार्यक्रमों का भी आयोजन हुआ। क्षमावाणी के अवसर पर डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री द्वारा चौराहे पर जैन-अजैन समाज के बीच विशेष व्याख्यान हुआ। **– चम्पालाल जैन**

सोनगढ (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह में पर्व के अवसर पर पण्डित सोनूजी शास्त्री द्वारा प्रातः पूजन, दशलक्षण धर्म पर विशेष कक्षा एवं रात्रि में दशलक्षण धर्म पर प्रथम बार नाटक का मंचन हुआ। नाटक के पश्चात् पण्डित सोनूजी शास्त्री द्वारा नाटक के विषय में चर्चा की गई। इस अवसर पर विद्यालय के अध्यापक पण्डित अनेकान्तजी शास्त्री, पण्डित आत्मप्रकाशजी शास्त्री, श्रीमती शिखा जैन का भी लाभ मिला। क्षमावाणी के अवसर पर गुरुदेवश्री के विशेष प्रवचन का लाभ मिला।

धूपदशमी पर आकर्षक झांकी

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 23 सितम्बर को धूपदशमी के अवसर पर अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर शाखा एवं श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में 'समाधि एवं सल्लेखना' विषय पर अत्यंत सुन्दर व सजीव झांकी का आयोजन किया गया।

झांकी के उद्घाटन के अवसर पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्री राजेन्द्रजी गोधा, श्री गणेशजी राणा, श्री गौरव जैन दक्ष प्रकाशनवाले, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल आदि महानुभाव उपस्थित थे। इस अवसर पर उपाध्याय कनिष्ठ एवं उपाध्याय वरिष्ठ के विद्यार्थियों ने अपने आकर्षक अभिनय द्वारा समाधि एवं सल्लेखना का वास्तविक स्वरूप बताया, जिसे लगभग 1500 लोगों ने सराहा। **– जिनकुमार शास्त्री**

महाविद्यालय के छात्र पुरस्कृत

जयपुर (राज.) : यहाँ मालवीय नगर में प्राकृत भारती अकादमी द्वारा दिनांक 28 अगस्त को श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के छात्रों को पुरस्कृत किया गया।

इसके अन्तर्गत प्राकृत प्री सर्टिफिकेट में प्रथम स्थान चर्चित जैन (90%) एवं अर्पित जैन (90%) ने प्राप्त किया, जिन्हें 1000 रुपये की राशि से पुरस्कृत किया गया। प्राकृत सर्टिफिकेट में प्रथम स्थान सौरभ जैन फूप (88.5%) ने प्राप्त किया, जिन्हें 2 हजार रुपये की राशि से पुरस्कृत किया गया।

टोडरमल स्मारक ट्रस्ट सम्मानित

'सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान' उपाधि से विभूषित

जयपुर (राज.) : यहाँ बिड़ला ऑडिटोरियम में अखिल भारतीय ओसवाल परिषद् द्वारा दिनांक 27 सितम्बर को आयोजित एक भव्य समारोह में श्री टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को धार्मिक एवं आध्यात्मिक शिक्षण के क्षेत्र में उसकी अनुपम उपलब्धियों के लिये ''सर्वश्रेष्ठ आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान'' उपाधि से विभूषित किया गया।

अनेक गणमान्य महानुभावों की उपस्थिति में जस्टिस चोपड़ा की अध्यक्षता में आयोजित इस भव्य समारोह में जयपुर के मेयर श्री निर्मलजी नाहटा एवं ओसवाल परिषद् के संस्थापक चैयरमेन श्री रायचन्दजी खटेड के करकमलों सम्मान किया गया। टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की ओर से यह सम्मान श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्रीमती कमला भारिल्ल व ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने ग्रहण किया।

इस अवसर पर ओसवाल परिषद् की ओर से समाज के विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत 12 अन्य संस्थाओं और व्यक्तियों को भी सम्मानित किया गया।

डॉ. भारिल्ल के सल्लेखना पर विशेष प्रवचन

जिनवाणी चैनल पर प्रसारित होनेवाले डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचनों की शृंखला में दिनांक 1 नवम्बर से 'समाधिमरण' विषय पर प्रवचन प्रारम्भ हो रहे हैं।

ये प्रवचन जिनवाणी चैनल पर प्रतिदिन प्रातः 7.00 से 7.30 बजे तक प्रसारित किये जावेंगे।

सुनना न भूलें।

यह जानकारी अपने मित्रों / रिश्तेदारों व परिचितों को भी अवश्य देवें।

मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति, देशभर में शोक सभायें

(1) कोटा (राज.) में दिनांक 3 अक्टूबर को बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के देहावसान के प्रसंग पर श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर देशभर से सैंकड़ों आत्मार्थी मुमुक्षुजन कोटा पहुँचे। सभा के प्रारम्भ में मुमुक्षु मण्डल कोटा के अध्यक्ष श्री ज्ञानचन्दजी जैन ने बाबूजी का परिचय देते हुये उनके उपकारों को स्मरण किया।

तदुपरान्त पण्डित प्रदीपजी झांझरी उज्जैन ने उनके अन्तिम समय का विस्तृत विवरण बताते हुये समाधिपूर्वक उनके देहविलय की बात कही।

सभा में मुख्य वक्ता के रूप में उपस्थित डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने कहा कि युगलजी के साथ हमने लगभग 60 वर्षों तक कंधे से कंधा मिलाकर वीतरागी तत्त्वज्ञान के प्रचार-प्रसार का कार्य किया है। उनका व्यक्तित्व सबसे अलग हटकर था। उनका लेखन, उद्बोधन, भाषा-शैली, बोलचाल, पहनावा सब कुछ विशिष्ट था। उनके लेखन एवं प्रवचन की प्रत्येक पंक्ति स्वयं बोलती है कि मैं युगलजी की हूँ। ऐसे व्यक्तित्व का वियोग मुमुक्षु समाज के लिये अपूरणीय क्षति है।

इसके अतिरिक्त पण्डित विमलदादा झांझरी उज्जैन, श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा, श्री महिपालजी ज्ञायक बांसवाड़ा, डॉ. सुदीपजी जैन दिल्ली, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर, पण्डित राजकुमारजी शास्त्री उदयपुर, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित धनसिंहजी पिड़ावा, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया मंगलायतन, श्री सतीशजी दोशी मुम्बई, श्री अजितकुमारजी जैन बड़ौदा आदि ने अपने वक्तव्य के माध्यम से बाबूजी का उपकार स्मरण करते हुये उनके सुपुत्र चिन्मय जैन एवं समस्त परिवार को तत्त्वज्ञान के अवलम्बन से सहज/शांत रहने हेतु उद्बोधन दिया।

अन्य उपस्थित विशिष्ट महानुभावों में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल जयपुर, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित मनीषजी शास्त्री रहली आदि अनेक विद्वानों के अतिरिक्त पण्डित रतनचंदजी शास्त्री, पण्डित चैतन्यजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, पण्डित निकलंकजी शास्त्री, पण्डित आशीषजी शास्त्री, पण्डित अभिलाषजी शास्त्री आदि स्थानीय विद्वानों की गरिमामयी उपस्थिति रही।

सभा का संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं श्री अजितजी जैन ग्वालियर ने किया।

(2) मुमुक्षु समाज के मूर्धन्य विद्वान तलस्पर्शी आध्यात्मिक चिन्तक बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के देहविलय पर दिनांक 1 अक्टूबर 2015 को रात्रि में ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका की अध्यक्षता में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर टोडरमल महाविद्यालय के छात्र प्रतिनिधि संयम जैन नागपुर, टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक प्रतिनिधि के रूप में डॉ.दीपकजी जैन एवं अनिलजी शास्त्री, दैनिक स्वाध्याय के श्रोताओं के प्रतिनिधि के रूप में श्री ताराचंदजी सोगानी, ट्रस्ट के कार्यकारी महामंत्री श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, युवा फैडरेशन की ओर से श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, ट्रस्टी ब्र. यशपालजी जैन एवं महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल इत्यादि ने उनके जीवन से संबंधित संस्मरण सुनाते हुये उनके व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला और श्रद्धांजलि दी। अन्त में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने उनके जीवन व साहित्य का परिचय देते हुये उनके व्यक्तित्व के अनेक पहलुओं पर प्रकाश डाला।

सभा का संचालन करते हुये उपप्राचार्य पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने उनकी अनेक रचनाओं के मार्मिक अंश सुनाये। सभा में श्री अनिलजी सेठी, श्री शांतिलालजी अलवर आदि अनेक मुमुक्षुगण उपस्थित थे।

श्रद्धांजलि सभा के पूर्व बाबू जुगलकिशोरजी 'युगल' के नियमसार ग्रंथ पर वीडियो प्रवचन का सभी ने लाभ लिया।

ज्ञातव्य है कि प्रात:काल श्री दि. जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर जौहरी बाजार में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के सान्निध्य में श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इसके अतिरिक्त दिल्ली, उदयपुर, कलकत्ता, नागपुर, ग्वालियर, भिण्ड, अलवर, बैंगलोर, छिन्दवाड़ा, देवलाली, विदिशा, जबलपुर, मंगलायतन, मुम्बई आदि शताधिक स्थानों पर शोक सभायें आयोजित की गईं। •

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

31 अक्टू. व 1 नव.	इन्दौर (ढाईद्वीप)	वेदी शिलान्यास
8 से 12 नवम्बर	देवलाली-नासिक (महा.)	भ.महावीर निर्वाणोत्सव
18 से 25 नवम्बर	जयपुर (टोडरमल स्मारक भवन)	सिद्धचक्र मण्डल विधान
25 से 30 दिसम्बर	गढाकोटा (म.प्र.)	पंचकल्याणक प्रतिष्ठा
30 व 31 जनवरी 2016	भोपाल (दीवानगंज)	वेदी शिलान्यास

ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण मोक्षमार्गप्रकाशक का विमोचन संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जौहरी बाजार स्थित श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर में दिनांक 2 अक्टूबर को पण्डित टोडरमलजी द्वारा हस्तलिखित मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ की ताम्रपत्र पर उत्कीर्ण मूलप्रति के विमोचन समारोह का कार्यक्रम संपन्न हुआ। लगभग 500 पृष्ठीय इन ताम्रपत्रों का कुल वजन 103 कि.ग्रा. है। ताम्रपत्रों पर उत्कीर्ण मोक्षमार्गप्रकाशक ग्रन्थ अब हजारों वर्षों के लिये सुरक्षित हो गया है।

इस प्रसंग पर प्रात: श्रुतस्कंध विधान का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर आयोजित सभा में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा पण्डित टोडरमलजी के संबंध में अनेक मार्मिक पहलुओं को स्पर्श करते हुये मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

पण्डित टोडरमलजी की कार्यस्थली इस दिगम्बर जैन मंदिर का परिचय श्री विनयजी पापड़ीवाल ने दिया। साथ ही पण्डित शांतिकुमारजी पाटील के मार्मिक उद्बोधन का लाभ मिला।

इस अवसर पर मन्दिर कमेटी द्वारा ताम्रपत्र ग्रन्थ के उत्कीर्णकर्ता पण्डित मनोजजी जैन मुजफ्फरनगर (चीनी वाले) का सम्मान किया गया। पण्डित मनोजजी द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट, श्री दिगम्बर जैन तेरापंथी बड़ा मंदिर एवं दीवान भधीचंदजी के मंदिर को इस ग्रन्थ का प्रतीक स्मृति चिह्न भेंट किया गया। कार्यक्रम में लगभग 400-450 साधर्मीजन उपस्थित थे।

सभा में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के अतिरिक्त पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, पण्डित परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. एस.बी. पापड़ीवाल, डॉ. सुरेन्द्रकुमारजी शाह दीवान, श्री निहालचंदजी जैन पीतल फैक्ट्री, श्री शांतिलालजी अलवरवाले, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, श्रीमती कमला भारिल्ल एवं श्रीमती गुणमाला भारिल्ल की गरिमामयी उपस्थिति रही।

समस्त अतिथियों का सम्मान श्री कांतिकुमारजी गंगवाल, श्री महेन्द्रकुमारजी गोधा, श्री विजयकुमारजी सौगानी, श्री ओमप्रकाशजी जैन एवं श्री सुशीलजी जैन द्वारा किया गया।

संपूर्ण कार्यक्रम का संचालन एवं संयोजन डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर ने किया।

पटाखा पोस्टर मंगायें

भगवान महावीर निर्वाणोत्सव के पावन अवसर पर पटाखों से होने वाली जन-धन हानि के प्रति लोगों को जागरूक करने हेतु विशाल रंगीन पोस्टर एवं हैंडबिल को प्रकाशित कर संपूर्ण देश के जिनमंदिरों, तीर्थक्षेत्रों, विद्यालयों, सार्वजनिक संस्थाओं को भेजा जायेगा। पोस्टर व हैंडबिल प्राप्त करने हेतु संपर्क करें - संजय शास्त्री, बी-180, ए-2, मंगल मार्ग, बापूनगर, जयपुर-302015; मोबाइल - 09785999100

एडमोंटोन (कनाडा) में धर्मप्रभावना

एडमोंटोन/अल्बर्टा : यहाँ दिनांक 11 से 17 सितम्बर तक डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा अभूतपूर्व धर्मप्रभावना हुई।

यहाँ प्रतिदिन प्रात: लगभग 2 घंटे में एक पूजन विस्तार से अर्थ समझते हुये की जाती थी। दोपहर में प्रतिदिन कल्याणमंदिर स्तोत्र पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला तथा सायंकाल तीनलोक की चर्चा करते हुये चतुर्गति के दु:खों से छूटने के उपायों पर चर्चा हुई।

दिनांक 13 सितम्बर को विशाल जनसमूह के बीच राजमलजी पवैया कृत शांति विधान का सुन्दर आयोजन किया गया।

ज्ञातव्य है कि कनाडा के अल्बर्टा प्रान्त में पहली बार किसी दिगम्बर जैन विद्वान को आमंत्रित किया गया।

- सम्यगभाई शाह

सर्वधर्म सम्मेलन में डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया

मुम्बई : यहाँ डॉनवोस्को चर्च में हिन्दू, मुस्लिम, सिक्ख, ईसाई आदि सभी धर्मों के गुरुओं की उपस्थिति में 'पृथ्वी एक धर्म अनेक' विषय पर बोलते हुये डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया ने महासत्ता-अवान्तरसत्ता के स्वरूप को बताते हुये कहा कि जैनदर्शन समानता के आधार पर एकता की बात करता है। जैनदर्शन में अपने अस्तित्व को कायम रखते हुये सबमें (महासत्ता में) सम्मिलित किया गया है, अपना अस्तित्व खोकर नहीं। जैनमतानुसार हम सब एक से हैं, एक नहीं।

शोक समाचार

(1) जयपुर (राज.) निवासी श्री वीरेन्द्रकुमारजी जैन (दरगुवाँ वाले) का दिनांक 22 सितम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। ज्ञातव्य है कि आप टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित अरविन्दजी शास्त्री के भ्राता एवं पण्डित प्रदीपजी शास्त्री व पण्डित प्रभातजी शास्त्री के पिताजी थे।

(2) प्रतापगढ (राज.) निवासी श्रीमती राजमती पतंगिया धर्मपत्नी श्री कांतिलालजी पतंगिया का दिनांक 20 सितम्बरको 72 वर्ष की आयु में अत्यंत समताभावपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में जैनपथप्रदर्शक एवं वीतराग-विज्ञान हेतु 500-500/- रुपये प्राप्त हुये।

(3) उदयपुर (राज.) निवासी श्रीमती अमृतदेवी का दिनांक 20 सितम्बर को 95 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आपकी स्मृति में संस्था हेतु 1000/- रुपये प्राप्त हुये।

दिवंगत आत्मायें चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों - यही मंगल भावना है।

व्याख्यानमाला में विशेष प्रवचन

जयपुर (राज.) : यहाँ दुर्गापुरा स्थित चन्द्रप्रभ स्वामी दिगम्बर जैन मंदिर में मुनिश्री ऊर्जयन्तसागरजी महाराज के सान्निध्य में रविवारीय व्याख्यानमाला के क्रम में दिनांक 6 सितम्बर को डॉ. संजीवकुमारजी गोधा द्वारा जैनदर्शन की अद्भुत प्रतिपादन शैली 'नय' के आधार से 'जीवन में दृष्टिकोण' विषय पर मार्मिक प्रवचन का लाभ मिला।

साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न

जयपुर (राज.) : (1) यहाँ टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय द्वारा होने वाली गोष्ठियों की शृंखला में दिनांक 23 अगस्त को 'जिनागम के आलोक में ध्यान' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में पीयूष जैन (उपाध्याय वरिष्ठ), संयम शाह (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं अमित जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे।

गोष्ठी का मंगलाचरण अरिहंत जैन ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अनुभव जैन एवं मनीष जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

(2) दिनांक 30 अगस्त को 'अमृत महोत्सव : समाधि-सल्लेखना' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्री शान्तिलालजी जैन अलवरवालों ने की। प्रमुख वक्ता के रूप में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल मंचासीन थे। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में ममित जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं वीतराग वसवाडे (शास्त्री तृतीय वर्ष) रहे। निर्णायक के रूप में श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल उपस्थित थे।

गोष्ठी का मंगलाचरण मयंक जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के निवेश जैन एवं जितेन्द्र जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित शान्तिकुमारजी पाटील ने किया।

(3) दिनांक 6 सितम्बर को 'कर लो जिनवर का गुणगान' विषय पर एक गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित राजेशजी शास्त्री शाहगढ ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में नयन जैन (उपाध्याय कनिष्ठ), विशाल जैन (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण नितिन जैन ने तथा संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के अनुभव जैन एवं मनीष जैन ने किया। आभार प्रदर्शन पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

सभी गोष्ठियों का संयोजन अच्युतकांत जैन एवं सौरभ जैन फूप ने किया।

महिला मंडल ने मनाया क्षमावाणी पर्व

श्री टोडरमल वीतराग-विज्ञान महिला मंडल द्वारा भगवान आदिनाथ पंचकल्याणक पर अक्षय निधि का कार्यक्रम क्षमावाणी के दिन आयोजित किया गया। अत्यंत उल्लास के साथ आयोजित इस कार्यक्रम का संचालन श्रीमती सुशीला जैन ने किया। **– मंत्री, कमला भारिल्ल**

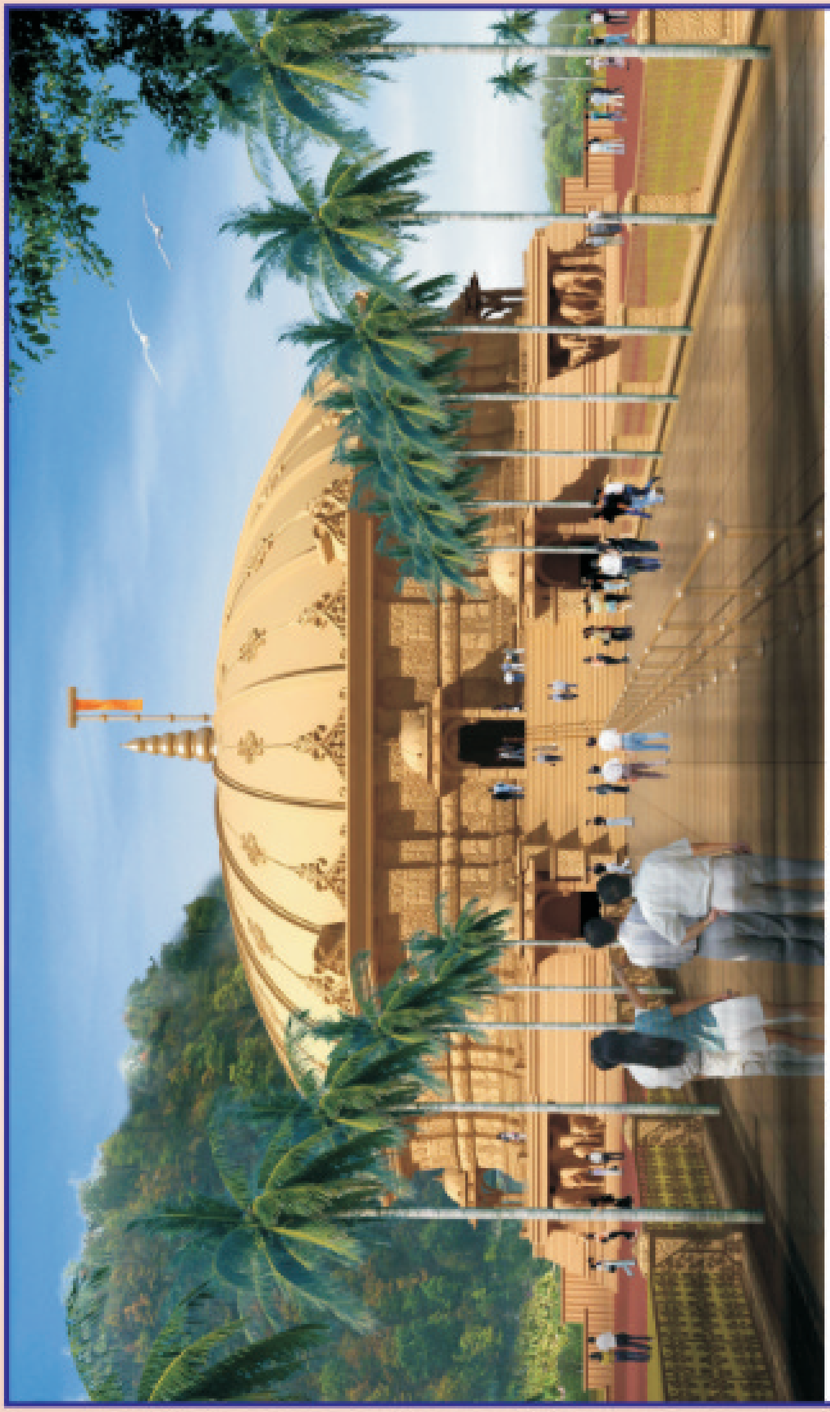

तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर का प्रस्तावित चित्र

R.N.I. No. 38278/83 *Postal Regd. No. JaipurCity/421/2015-17*

आध्यात्मिक सत्पुरुष पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी

तीन लोक के तीरथ जहाँ, नित प्रति वन्दन कीजे तहाँ।

श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन शासन प्रभावना ट्रस्ट एवं
श्री पंच लश्करी गोठ ट्रस्ट, रामाशाहजी मंदिर, मल्हारगंज, इन्दौर

तीर्थधाम ढाई द्वीप जिनायतन में भव्य वेदी शिलान्यास महोत्सव एवं
षष्ठम आध्यात्मिक शिक्षण शिविर एवं प्रथम राष्ट्रीय धार्मिक विद्यालयों का अधिवेशन

शनिवार, दिनांक 31 अक्टूबर एवं रविवार दिनांक 01 नवम्बर 2015 तक

[illegible]

[illegible]

विश्व के अद्वितीय निर्माणाधीन तीर्थधाम ढाई द्वीप जिनायतन में विराजमान होने वाली 1138 प्रतिमाओं का एक साथ अद्भुत अवलोकन

रविवार, दिनांक 1 नवम्बर 2015
तीर्थधाम ढाईद्वीप जिनायतन, इन्दौर

प्रातः	7.30 से 8.00	– जिनेन्द्र अभिषेक एवं पूजन
	8.00 से 9.00	– स्वल्पाहार
	9.00 से 10.00	– पूज्य गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन
	10.00 से 10.45	– प्रथम प्रवचन
	10.45 से 11.30	– द्वितीय प्रवचन (डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल)
दोपहर	12.00 से 2.00	– शिलान्यास महोत्सव
	2.00 बजे से	– स्वरुचि भोज

सम्पादक :
डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल
शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., पीएच. डी.
सह-सम्पादक :
डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम. फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.
प्रकाशक एवं मुद्रक :
ब्र. यशपाल जैन, एम. ए.
द्वारा पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के लिये
जयपुर प्रिंटर्स प्रा.लि., जयपुर से
मुद्रित एवं प्रकाशित।

If undelivered please return to -- Pandit Todarmal Smarak Trust, A-4, Bapu Nagar, Jaipur - 302015